भारतीय अर्थव्यवस्था में गाँधीवादी अर्थशास्त्र की भूमिका

जन्मजेय खुंटीआ [1] एवं रीना बजाज [2]

[1]Department of Economics, School of Open learning, University of Delhi, Delhi
[2]School of Open learning, University of Delhi, Delhi

Email Id: janmejoykhuntia@gmail.com

सार (Abstract)

जैसाकि हम सभी जानते हैं कि राष्ट्रपिता महात्मा गाँधी जी ने भारत को ब्रिटिश औपनिवेशिक शक्तियों से मुक्त कराने में अत्यंत महत्त्वपूर्ण योगदान दिया है जिसे कभी भी भुलाया नहीं जा सकता है। पश्चिमी अर्थशास्त्रियों ने अर्थव्यवस्था के संचालन से संबंधित मौद्रिक एवं भौतिकतावादी अर्थशास्त्र की रचना की वहीं गाँधी जी ने सभी प्राणियों के कल्याण हेतु तथा कुशल राजसंचालन से संबंधित आध्यात्मिक तथा नैतिकतापूर्ण अर्थशास्त्र की रचना की जो समस्त वर्ग के लोगों, पूँजीपतियों तथा देश की आर्थिक क्रियाओं के कुशल संचालन के लिए आज भी प्रासंगिक है। इस लेख के माध्यम से गाँधी जी के आर्थिक विचारों पर प्रकाश डाला गया है जो यह बताता है कि वर्तमान युग में भारतीय अर्थव्यवस्था को सुदृढ़, शक्तिशाली व आत्मनिर्भर बनाने में इन विचारों की भूमिका कितनी महत्त्वपूर्ण है।

मुख्य शब्दावली

मितव्ययिता, अमिट, अभूतपूर्व, बहिष्कार, केन्द्रीयकरण, विकेन्द्रीयकरण, स्वराज, ट्रस्टीशिप, पुर्नजीवन, आध्यात्मिक, नैतिकता, सत्य एवं अहिंसा, पूँजीपति वर्ग।

प्रस्तावना (Introduction)

महात्मा गाँधी के आर्थिक विचार सत्य एवं अहिंसा पर आधारित विचार है जबकि अर्थशास्त्रियों जिनमें मार्शल, पीगू तथा राबिन्स आदि के आर्थिक विचार भौतिकवादी विचारधारा के अन्तर्गत आते हैं उनके अनुसार अर्थशास्त्र वह शास्त्र है जो भौतिक समृद्धि के माध्यम से मानव कल्याण को दर्शाता है बिना भौतिक समृद्धि के मानव का कल्याण संभव नहीं होता है इसके विपरीत गाँधी जी ने भौतिक समृद्धि के स्थान पर आध्यात्मिक सुख को ही मानव कल्याण के लिए एक

आवश्यक तत्त्व माना है। गाँधी जी के आर्थिक विचारों को स्वर्गीय डॉ. जे. सी. कुमारप्पा आदि विद्वानों ने पुनः संकलित करके उन्हें गाँधीवादी अर्थशास्त्र के नाम से अलंकरित किया है। गाँधी जी के आर्थिक विचारों पर रामचरितमानस, भगवतगीता, उपनिषदों, कबीर तथा गुरुनानक के विचारों का, अत्यधिक प्रभाव पड़ा है। गाँधी जी ने समानता, वैराग्य और सादगी के विचारों को टाल्सटाय के दर्शनशास्त्र से प्राप्त किया था।

रस्किन ने अपनी पुस्तक "Unto this Last" में अर्थशास्त्र को काला विज्ञान कहकर पुकारा था इस पुस्तक के अध्ययन से गाँधी जी ने यह निष्कर्ष प्राप्त किया था कि क्रियाएँ मानव कल्याण में वृद्धि नहीं करती, उन्हें अनैतिक क्रियाएँ कहकर पुकारा जाना चाहिए। गाँधी जी के आर्थिक विचारों पर समकालीन घटनाओं व परिस्थितियों का भी प्रभाव देखा जा सकता है जैसेकि विश्वयुद्ध की घटनाओं से गाँधी जी ने पश्चिमी भौतिकवादी व्यवस्था की आलोचना की तथा आध्यात्मिक सुख को तथा अभौतिक सुझावों से समस्याओं के समाधान पर बल दिया।

स्वदेशी आंदोलन के काल में गाँधी जी ने अपने देश में व अपने साधनों से बनी वस्तुओं के प्रयोग पर बल दिया ताकि भारत आत्मनिर्भर बन सके तथा देश में विद्यमान उद्योग-धंधों का विकास हो व श्रमशक्ति को रोजगार प्राप्त हो।

भारत आरंभिक काल से ही कृषि प्रधान देश रहा है तथा यहाँ देश की आबादी का अधिकांश भाग ग्रामीण क्षेत्रें में निवास करता है इसलिए गाँधी जी ने ग्रामीण क्षेत्र के विकास पर अत्यधिक बल दिया उनके अनुसार ग्रामीण क्षेत्रें के विकास के बिना भारत का विकास संभव नहीं है। वास्तव में गाँधी जी के आर्थिक विचार अर्थव्यवस्था में राम-राज्य को पुनः जीवंतता प्रदान करने वाले विचार है।

भारतीय अर्थव्यवस्था में गाँधीवादी विचारधारा का योगदान

भारतीय अर्थव्यवस्था में गाँधीवादी विचारधारा का योगदान अमिट और अभूतपूर्व है यूँ तो जीवन के हर पहलू में गाँधीजी के विचार अविस्मरणीय है लेकिन गाँधीजी के आर्थिक विचार अर्थव्यवस्था को सुचारू रूप से चलाने के नियमावली एवं कार्यप्रणाली सर्वाधिक उत्कृष्ट कृति है गाँधीजी के आर्थिक विचारों का अनुसरण करना अति आवश्यक है। आज भारत में व्याप्त गरीबी बेरोजगारी जनसंख्या वृद्धि, भ्रष्टाचार, मशीनीकरण, वर्ग-संघर्ष आदि सभी समस्याओं के उत्पन्न होने का मुख्य कारण गाँधीवादी विचारों का पूर्ण अनुसरण न करना ही है। यदि भारत देश तथा देश की समस्त जनता गाँधीवादी विचारों को ही अपना पथ-प्रदर्शक मानती तथा उन्हीं का

अनुसरण करती तो देश में व्याप्त समस्याओं का स्वतः ही अंत हो जाता और भारत में मानव जीवन खुशहाली से भर जाता। आज मानव भौतिकवादी तथा पश्चिमी सभ्यता के मूल्यों की ओर अग्रसर हो रहा हैए जिसके कारण मनुष्य का नैतिक पतन हो रहा है। गाँधीजी भौतिक समृद्धि के स्थान पर आध्यात्मिक सुख को सर्वोपरि मानते थे। उन्होंने अर्थशास्त्र का अध्ययन भी एक निराली पद्धति से किया उन्होंने कहा कि अर्थशास्त्र केवल कुछ सिद्धांतों पर आधारित शास्त्र नहीं है जिसके कारण इसके अध्ययन को भी किसी एक विधि से नहीं किया जा सकता है अतएव उन्होंने अर्थशास्त्र का अध्ययन नैतिकतापूर्ण नीति से किया जिसमें मानव मूल्यों को अधिक महत्त्व दिया। गाँधीजी ने भारत देश को जो अमूल्य आर्थिक विचार प्रदान किए है उसके लिए भारत सदैव उनका ऋणी रहेगा।

गाँधीजी के आर्थिक विचार

गाँधीजी के आर्थिक सिद्धांतों में सर्वप्रथम सिद्धांत "मितव्ययता का सिद्धांत" है जिसके अन्तर्गत गाँधीजी ने "कम खर्च" को महत्त्व दिया। वे कहते थे कि भारत में व्याप्त पूँजी की कमी को इस सिद्धांत के द्वारा ही प्राप्त किया जा सकता है कम खर्च के द्वारा देश में बचन व निवेश के स्तर में वृद्धि होनी प्रारंभ हो जाएगी, जिसके कारण देश प्राकृतिक व मानवीय संसाधनों का कुशलतम प्रयोग करके अर्थव्यवस्था में व्याप्त "निर्धनता के दुष्चक्र" को तोड़ा जा सकता है। उनके अनुसार यदि व्यक्ति अपनी आवश्यकताओं को सीमित कर ले तथा वस्तुओं व सेवाओं का सदुपयोग करें तो व्यर्थ मे होने वाली वस्तुओं व सेवाओं की हानि तथा धन की अनुपयोगिता को समाप्त किया जा सकता है। गाँधीजी प्रत्येक भारतवासी में "राष्ट्रीयता" की भावना का संचार करना चाहते थे जिसके कारण उन्होंने देश में "स्वदेशी आंदोलन" चलाया तथा विदेशी वस्तुओं का बहिष्कार किया। वे भारत को पूर्ण रूप से आत्मनिर्भर बनाना चाहते थे। जिसके कारण उन्होंने राष्ट्रीयता की भावना तथा देश प्रेम को मूल मंत्र माना। इतिहास गवाह है कि जिन देशों ने भी अपने आपको पूर्ण विकसित किया है उसमें मुख्य योगदान उनकी देश की प्रति राष्ट्रीयता की भावना तथा कम खर्च के द्वारा पूँजी निर्माण की दर में वृद्धि हो रहा है। इस प्रकार गाँधीजी ने देश की जनता को आग्रह किया कि वे अपनी आवश्यकताओं को सीमित कर दे। हम जानते हैं कि आवश्यकता जहाँ एक ओर "अविष्कार की जननी है" वहीं दूसरी समस्याओं की भी जननी है अतएव गाँधीजी के इस सिद्धांत ने अर्थव्यवस्था को एक नया मोड़ दिया। गाँधीजी "अपना कार्य स्वयं करो" के समर्थक हैं यद्यपि गाँधीजी मशीनीकरण के पूर्णतया विरोधी नहीं थे लेकिन वे मशीनों के अधिक प्रयोग को भी उचित नहीं मानते थे। वे कहते थे कि मशीनों का प्रयोग केवल उसी दशा में देश के लिए हितकार साबित होता है जब देश में श्रमशक्ति की कमी हो लेकिन

भारत जैसे देश में जहाँ पहले से ही श्रमशक्ति की अधिकता है वहां मशीनों का अधिक प्रयोग देश में बेरोजगारी, गरीबी, हिंसा, निराशा तथा असंतोष को उत्पन्न करता है गाँधीजी ने मशीनों की तुलना "सांप के बिलों" से की है तथा आधुनिक सभ्यता को "शैतानों की सभ्यता" कहकर पुकारा है गाँधीजी के अनुसार मशीनों के प्रयोग से जितना उत्पादन सैकड़ों श्रमिक अलग-अलग रूप से करते हैं उतना ही उत्पादन एक दो श्रमिक कर डालते हैं जिससे बेरोजगारी बढ़ती है मशीनें जहाँ एक ओर अति उत्पादन को प्रोत्साहित करती हैं, वहीं दूसरी ओर आर्थिक संकट की स्थिति को भी उत्पन्न करती हैं अमेरिका जैसे विकसित देश मशीनों के अत्यधिक प्रयोग के कारण ही अर्थिक संकट की स्थिति से गुजर रहा है इस प्रकार गाँधीजी मशीनों के अत्यधिक प्रयोग को सीमित करके देश की जनता को पूर्ण रोजगार देना चाहते थे। गाँधीजी ने मशीनों के अत्यधिक प्रयोग को देश में केन्द्रीयकरण की प्रवृत्ति का भी दोषी माना था उनके अनुसार पूँजीपति वर्ग देश में आय व धन का तथा आर्थिक सत्ता का केन्द्रीयकरण करके श्रमिक वर्ग के साथ अमानवीय व्यवहार करता है तथा उनका शोषण दमन करता है गाँधीजी "धन व आर्थिक सत्ता" के विकेन्द्रीयकरण के पक्ष में थे वे चाहते थे कि धन केवल कुछ ही लोगों के हाथ में सीमित न रहकर सभी के अधिकार क्षेत्र में आना चाहिए इसके लिए गाँधीजी में "ट्रस्टीशिप" की नीति का समर्थन किया उन्होंने कहा कि पूँजीपति तो केवल ट्रस्टी का कार्य करते है और श्रमिक वर्ग पूँजीपतियां को अपना प्रतिद्वन्दी न मानकर शुभचिंतक मानेगा तथा उनके प्रति सद्भावना रखेगा। पूँजीपति वर्ग अनावश्यक उपभोग को कम करके पूँजी का अधिकाधिक प्रयोग सार्वजनिक हित के लिए करेगा।

गाँधीजी ने आर्थिक सत्ता के विकेन्द्रीयकरण के साथ-साथ आय व धन के समान वितरण पर भी जोर दिया जिसके लिए उन्होंने कहा कि सरकार को वस्तुओं व सेवाओं का वितरण इस प्रकार से करना चाहिए, जिससे देश की जनता को उनकी प्राप्ति हो सके तथा उत्पत्ति के साधनों के प्रयोग के बदले में भी उचित भुगतान का वितरण किया जाना चाहिए। सरकार को कर केवल उतनी ही मात्र में लगाने चाहिए जितने कि देश के विकास के लिए आवश्यक हो तथा कर सदैव व्यक्ति की कर देय क्षमता के अनुसार ही लगाए जाने चाहिए इसी से देश का अधिकतम कल्याण होगा। गाँधीजी देश को आत्मनिर्भर बनाना चाहते थे जिसके लिए उन्होंने "ग्राम-स्वराज्य" की विचारधारा प्रस्तुत की है। वे जानते थे कि भारत की अधिकांश जनसंख्या ग्रामीण क्षेत्र में निवास करती है इसलिए गाँधीजी ने ग्रामीण क्षत्र के लोगों को कहा कि वे अपनी सभी आवश्यकता की वस्तुओं का स्वयं निर्माण करें जैसे कपास, जूट, पटसन, अनाज, तिलहन आदि। गाँधीजी ने चरखे से स्वराज्य का नारा लगाया तथा उन्होंने कहा था कि "हमने चरखा क्या

खोया बल्कि अपना बायाँ फेफड़ा खो दिया" वे लोगों में खादी वस्त्रों का प्रचार करते थे तथा गाँवों को आत्मनिर्भर बनाने के लिए कुटीर उद्योगों के माध्यम से ही दूर किया जा सकता है गाँधीजी के अनुसार कुटीर उद्योग देश की विशाल जनसंख्या को रोजगार प्रदान करके उनकी आय प्राप्ति के स्रोतों में भी वृद्धि करते हैं। गाँधीजी ने बढ़ती जनसंख्या को भी एक गंभीर चिंता के रूप में लिया था उनके अनुसार देश की जनसंख्या उतनी ही होनी चाहिए जितना कि देश में खाद्य उत्पादन की क्षमता हो, आवश्यकता से अधिक जनसंख्या देश के विकास में बहुत बड़ी बाधा उत्पन्न करती है भारत की जनसंख्या स्वतंत्रता प्राप्ति से पूर्व ही निरंतर बढ़ती गई है जबकि उसके अनुसार देश की खाद्य पदार्थों में वृद्धि अंक गणितीय हुई है जैसे 1,2,3,4,5,..... यही कारण है कि देश में बढ़ती जनसंख्या खाद्य संकट उत्पन्न कर रही है यही नहीं जनसंख्या के बढ़ने से और भी कई समस्याओं का जन्म होता है जैसे गरीबी, बेरोजगारी, प्रतिव्यक्ति आय का निम्नस्तर, बचत व निवेश में कमी, खाद्य समस्या, मुद्रास्फीति, भुगतान असंतुलन आदि। इस प्रकार गाँधीजी के जनसंख्या संबंधी विचार भी अत्यंत सराहनीय है गाँधीजी स्वयं सत्य की प्रतिमा थे वे जो कहते थे वही करते थे अर्थात् उनकी "कथनी व करनी" में कोई भेद न था उन्होंने सारी जिंदगी पवित्रता, शुद्धता व सत्यता के साथ निभाई। वे सादा जीवन, उच्च विचार" की नीति के समर्थक थे। उन्होंने धन के स्थान पर मनुष्य को अधिक महत्त्व दिया वे कहते थे कि धन मनुष्य के लिए है मनुष्य धन के लिए नहीं तथा धन प्राप्ति की होड़ ही असंतोष का मुख्य कारण है। इन सभी कारणों से गाँधीजी ने धन के मोह की समाप्त करके पारस्परिक कल्याण से संबंधित क्रियाकलापों को अपनाने का सुझाव दिया था गाँधीजी ने देश में व्याप्त कई बुराइयों जैसे वर्ण व्यवस्था, वर्ग-संघर्ष, ऊँची व निम्न जाति में भेदभाव जैसी कई समस्याओं व कुरीतियों का अंत किया।

उन्होंने सरकारी हस्तक्षेप की अधिकता को भी व्यक्तिगत उन्नति के मार्ग में बाधा माना था उन्होंने कहा कि सरकारी हस्तक्षेप उतना ही होना चाहिए जितना कि देश के विकास में अनिवार्य सिद्ध हो सके। व्यक्तियों को आर्थिक स्वतंत्रता प्रदान की जानी चाहिए ताकि वे मन लगाकर काम करे और देश की प्रगति में पूर्ण सहयोग प्रदान करें। गाँधीजी के विचार ही थे जिन्होंने अर्थव्यवस्था की सभी समस्याओं को बहुत सरलता से हल किया तथा उन्हें अमरत्व प्रदान किया। भारतीय अर्थव्यवस्था में तथा आर्थिक विचारों के इतिहास में गाँधीजी का नाम सदैव "स्वर्णाक्षरों" में अंकित रहेगा। गाँधीजी के आर्थिक विचारों का प्रभाव केवल भारतीयों पर ही नहीं बल्कि विश्व भर के कई देशों पर भी पड़ा है तथा उन्हें मान्यता भी मिली है यद्यपि गाँधीजी ने कभी अर्थशास्त्र का अध्ययन नहीं किया लेकिन व्यवहारिक आर्थिक समस्याओं के

अध्ययन से ही उन्हें एक अर्थशास्त्री का रूप प्रदान किया गया। गाँधीजी ने स्वयं अर्थशास्त्र से संबंधित कई पुस्तकों का विमोचन किया जिनमें प्रमुख हैं–

Cent-Percent Swadeshi

Economics of Khadi

Constructive Programme its meaning and Place

Food shortage and Agriculture

उपसंहार या निष्कर्ष (Conclusion)

गाँधीजी के पास ज्ञान का वह अमूल्य भंडार था जिसने उन्हें तथा उनके आर्थिक विचारों को सर्वाधिक मान्यता प्रदान की। गाँधीजी के आर्थिक विचार देश के लिए वह अनमोल खजाना है, जिसे जितना प्रयोग करो, उतना ही बढ़ता चला जाता है।

गाँधी जी के आर्थिक विचार वास्तव में मानव कल्याण व विश्व कल्याण हेतु प्रदान किए गए सर्वश्रेष्ठ विचार है जो समाज में बिना किसी भेदभाव को उत्पन्न किए सबके कल्याण की भावन को व्यक्त करते हैं। उन्होंने धन के केन्द्रीयकरण के स्थान पर विकेन्द्रीयकरण पर बल दिया। सत्य और अहिंसा के माध्यम से शांतिपूर्ण व विश्व में सौहार्दपूर्ण वातावरण बनाए रखने पर बल दिया। मशीनीकरण के स्थान पर श्रम शक्ति के कुशल प्रयोग पर बल दिया। समाज के सभी वर्गों में असमानता के स्थान पर समानता स्थापित करने के विचार को प्रस्तुत किया। उन्होंने ईश्वरीय शक्ति में पूर्ण आस्था रखते हुए नैतिकता से सम्पन्न विचारों पर बल दिया वास्तव में यदि अर्थव्यवस्थाओं के विकास हेतु उनके आर्थिक विचारों को अपनाया जाए तो सम्पूर्ण विश्व का कल्याण हो।

स्वतंत्रता प्राप्ति के पश्चात् भारत सरकार ने महात्मा गाँधी के विचारों से ही अपना पथ-प्रदर्शन किया था एक कथन है–"A peaceful life of highest love and fullest non-possession for the individual, as also for the community, is the ultimate goal of Gandhian Economy." भारत सरकार ने शांतिपूर्ण तरीकों को गाँधीवादी अर्थव्यवस्था के उद्देश्य को प्राप्त करने के लिए कदम बढ़ाया है।

संदर्भ (References)

- 'An Essay on Gandhian Economics'—J.J. Anjariy.
- 'The Gandhian Plan'—S.N. Agarwal.
- 'Constructive Programme—Same Suggestions'—Dr. Rajendra Prasad.
- 'Cent Percent Swadeshi'—M.K. Gandhi.
- 'Constructive Programme–Its meaning and Place'—M.K. Gandhi.
- 'Food Shortage and Agriculture'—M.K. Gandhi.